" हिंदी में 'से' परसर्ग का अर्थ निर्धारण के सूत्र "

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में **एम.फिल. हिंदी (भाषा प्रौद्योगिकी)** की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

(सत्र- 2013-2014)

शोधार्थी

अनामिका गुप्ता

भाषा विद्यापीठ

भाषा प्रौद्योगिकी विभाग

भाषा विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित)

पोस्ट- हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा- 442005 (महाराष्ट्र) भारत

। ।

उत त्वः पश्यन् न ददर्श वाचमुत

। ।

त्वः शृण्वन् न शृणोत्येनाम्।

। । ।

उतो त्वस्मै तन्वं वि सस्तत्रे

। ।

जायेव मत्य उशती सुवासा :

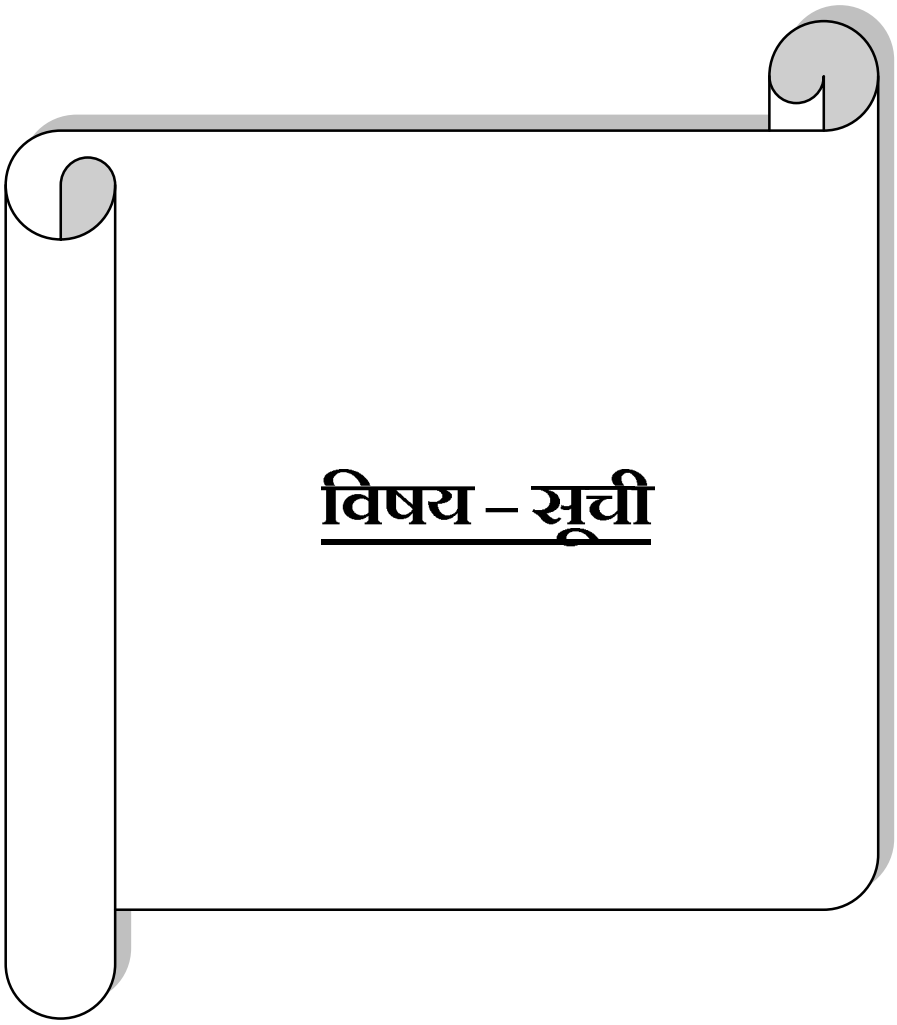

विषय – सूची

विषय - सूची

पृष्ठ - संख्या

भूमिका **1-6**

साहित्य का पुनरावलोकन **7-8**

प्रथम अध्याय **9-22**

हिंदी परसर्ग : परसर्ग का परिचय एंव स्वरूप

1.1 – परसर्ग परिचय 9-10

1.2 – परसर्ग स्वरूप 10-12

1.3 – परसर्ग की परिभाषा 12

(क) – भारतीय मत 12-13

(ख) – पाश्चात्य मत 14

1.4 – परंपरागत एंव आधुनिक व्याकरण की दृष्टि से 'व्याकरण' 15-16

1.5 – पाश्चात्य व्याकरण की दृष्टि से 'व्याकरण' (फिल्मोर) 17-19

1.6 – प्रजनक व्याकरण की दृष्टि से 'व्याकरण' (नोम चॉम्स्की) 19-22

1.7 – 'से' परसर्ग की व्युत्पत्ति 22

द्वितीय अध्याय 23-46

हिंदी अव्ययों का विश्लेषण पदबंध स्तर पर

2.1 – अव्ययों की परिभाषा 23-24

2.2 – अर्थ के आधार पर वर्गीकृत विभिन्न अव्यय 24-25

2.3 – पदबंध स्तर पर हिंदी अव्यय और परसर्गों का वर्णन 26-38

2.4 - क्रिया विशेषण अव्यय – अर्थ और परिभाषाएँ 38-39

2.4.1 – स्थानवाचक क्रियाविशेषण अव्यय 39-40

2.4.2 - कालवाचक क्रियाविशेषण अव्यय 40-42

2.4.3 – परिमाणवाचक क्रियाविशेषण अव्यय 42-44

2.4.4 – रीतिवाचक क्रियाविशेषण अव्यय 44-46

तृतीय अध्याय **47-60**

हिंदी में 'से' परसर्ग

3.1 – कारक व्याकरण 47-50

3.2 – अर्थ की दृष्टि से 'से' परसर्ग 50-53

3.3 – संरचना की दृष्टि से 'से'परसर्ग 54-60

चतुर्थ अध्याय **61-92**

'से' परसर्ग का आर्थी विश्लेषण और सूत्र का प्रतिपादन

4.1 – वाक्य 62

4.1.1 – वाक्य की परिभाषा 62

4.1.2 – वाक्य में कारक परक दृष्टिकोण 63-64

4.1.3 – वाक्य में कारक 64-68

4.1.4 – आंतरिक संरचना-बाह्य संरचना एंव उनका कारकीय रूपान्तरण 68-70

4.2 – वाक्यों में 'से' परसर्ग का आर्थी विश्लेषण और सूत्र का प्रतिपादन 70-86

4.2.1 – कारण संबंधी 4.2.2 – कालावधि संबंधी

4.2.3 – दिशा संबंधी 4.2.4 – माध्यम संबंधी

4.2.5 – समय संकेत 4.2.6 – उपकरण संबंधी

4.2.7 – अलगाव संबंधी 4.2.8 – तुलना संबंधी

4.2.9 – आपसी व्यवहार 4.2.10 – स्रोत्र संबंधी

4.2.11 – जगह संबंधी 4.2.12 – तरीका संबंधी

4.2.13 – असमर्थता संबंधी

4.3 – 'से' और 'को' का विश्लेषण 86-91

4.4 - निष्कर्ष 91-92

निष्कर्ष **93-95**

परिशिष्ट **96-98**

संदर्भ-सूची **99-101**

भूमिका

ऋग्वेद में एक ऋचा है –

। ।

उत त्व: पश्यन् न ददर्श वाचमुत

। ।

त्व: शृण्वन् न शृणोत्येनाम्।

। । ।

उतो त्वस्मै तन्वं वि सस्तत्रे

। ।

जायेव मत्य उशती सुवासा :

ऋग्वेद 10 . 71 . 4

जिसका अर्थ है, "जो व्याकरण नहीं जानता वह वाणी को देखते हुए भी नहीं देखता ; सुनते हुए भी नहीं सुनता, पर व्याकरण के विद्वान के सामने वाणी अपने को उसी प्रकार अभिव्यक्त कर देती है जिस प्रकार सुंदर वस्त्राभूषणों से सुसज्जित पत्नी अपने पति के सामने समर्पण कर देती है"। यह इस बात का संकेत है कि भाषा के ज्ञान के लिए उसका व्याकरण एंव उसकी रचना समझना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। ऋग्वेद के उक्त मंतव्य से **राबर्ट लोथ** भी सहमत प्रतीत होते है , इस संदर्भ में अपने विचार प्रकट करते हुए लिखा है कि **"किसी व्याकरण की रूपरेखा हमें उस भाषा में शिष्टता से अभिव्यक्त करने की क्षमता सीखाने के लिए, प्रत्येक पदबंध एंव रचना की शुद्धि एंव अशुद्धि परखने के लिए बनाई जाती है। यह करने का सरल उपाय यह है कि भाषा के नियम बना दिए जाएँ और**

उदाहरणों द्वारा उन्हें पुष्ट कर दिया जाए। किन्तु शुद्धियाँ बतलाने के साथ-साथ अशुद्धियों का संकेत करके इसे और भी स्पष्ट किया जा सकता है"।

जब किसी भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन करते हैं, तो उसे 'भाषा विज्ञान' कहते है। भाषा विज्ञान की चार उपव्यवस्थाओं का अध्ययन चार नामों से अभिहित किए जाते हैं – स्वनविज्ञान, रूपविज्ञान, वाक्यविज्ञान और अर्थ विज्ञान। भाषा की अभिव्यक्ति वाक्य के माध्यम से स्पष्ट होती है। व्याकरण की दृष्टि से वाक्य का निर्माण संज्ञा एंव क्रिया से होता है। किन्तु वाक्य के निर्माण में इनके अतिरिक्त परसर्ग, निपात, अव्यय और क्रिया विशेषण आदि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध **"हिंदी में 'से' परसर्ग का अर्थ निर्धारण के सूत्र"** विशेष संदर्भ : सूत्र और आर्थीय पक्ष पर केंद्रित है। इस लघु शोध-प्रबंध से पूर्व अग्रज बंधुओं ने **"हिंदी में प्रयुक्त परसर्गीय पदबंधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन"** और **"हिंदी में परसर्गीय पदबंध"** पर अपना लघु शोध-प्रबंध पूर्ण किया है। अत: उनके विश्लेषणात्मक पक्ष से आगे बढ़ते हुए सिर्फ 'से' परसर्ग के आर्थीय पक्ष और उसके नियमों का अध्ययन किया गया है, साथ ही 'से' परसर्ग का संरचना परक विश्लेषण भी प्रस्तुत किया गया है।

➢ शोध का उद्देश्य –

इस शोध का उद्देश्य हिंदी में 'से' परसर्ग की व्युत्पत्ति को सुनिश्चित करना, वाक्य में उसके स्थान को सुनिश्चित करना और 'से' परसर्ग का अन्य परसर्गों के साथ मिलकर युग्म बनाना तथा 'से' परसर्ग के आर्थीय पक्ष के साथ-साथ नियमों का प्रतिपादन करना है।

➢ परिकल्पना

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में 'से' परसर्ग के विभिन्न अर्थों का संरचना परक और आर्थीय परक विश्लेषण किया गया है। वैसे तो 'से' परसर्ग के विभिन्न आर्थी प्रकार्य हैं, पर इस लघु शोध-प्रबंध में 13 प्रकार्यों का आर्थी विश्लेषण किया गया है।

➢ शोध-प्रविधि –

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में आर्थीय विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। इसके अंतर्गत 'से' परसर्ग का आर्थी विश्लेषण किया गया है, यह विश्लेषण 'से' के विभिन्न आर्थी प्रकार्यों के आधार पर किया गया है। इस लघु शोध-प्रबंध में इस शोध प्रविधि का सम्यक् पालन किया गया है।

➢ द्वितीय स्त्रोत्र से लिया गया है –

1. विभिन्न पुस्तकें
2. गवेषणा
3. इंटरनेट द्वारा प्राप्त सामग्री

➢ शोध की उपयोगिता –

भाषा-विद्यापीठ के अंतर्गत भाषा-प्रौद्योगिकी विभाग में संपन्न किए जा रहे इस शोध की उपयोगिता निम्नांकित बिन्दुओं में निहित है –

1. इस शोध से हिंदी में सरल वाक्यों में 'से' की स्थिति को समझने में मदद मिलेगी।